Office Of The sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-9815494687, E-Mail : ansarullah@qadian.in

सारांश खुत्बः जुमः सय्य्दना ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसृहिल अज़ीज़ दिनांक 28.06.19 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिल्फ़ोर्ड, बर्तानिया।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय बदरी सहाबी हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ीयल्लाहु अन्हु के सद्गुणों का सुन्दर एवं मनमोहक वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत ज़ैद बिन हारसा के वर्णन में कुछ अन्य वृत्तांत एवं हवाले हैं जिन्हें आज मैं पेश करूँगा। सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में हज़त मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब लिखते हैं कि रबीउल आख़िर 6 हिजरी के महीने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारसा के नेतृत्व में कुछ मुसलमानों को बनी सलीम नामक क़बीले की ओर भेजा। यह क़बीला उस समय नजद के इलाक़े में जमूम नामक स्थान पर आबाद था तथा एक लम्बी अवधि से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरुद्ध सक्रिय था। ज़ैद बिन हारसा को इस अभियान से वापस आए अधिक दिन नहीं हुए थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जमदिउल ऊला के महीने में उन्हें एक सौ सत्तर सहाबियों का मुख्या बनाकर फिर मदीने से भेजा और इस अभियान का कारण सीरत लिखने वालों ने यह लिखा है कि शाम देश की ओर से मक्का के क़ुरैशियों का एक दल आ रहा था तथा उसकी रोक थाम के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस दल को भेजा था। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यहाँ यह भी स्पष्ट कर दूँ कि क़ुरैश के यात्री दल सदैव हथियारों के साथ होते थे तथा मक्का और शाम आते जाते हुए वे मदीना के बिल्कुल निकट से गुज़रते थे जिसके कारण उनकी ओर से सदैव आशंका बनी रहती थी। इसके अतिरिक्त ये यात्री दल जहाँ जहाँ से गुज़रते, अरब के क़बीलों को मुसलमानों के विरुद्ध उकसाते जाते थे जिसके कारण पूरे देश में मुसलमानों के विरुद्ध शत्रुता की भीषण आग लग चुकी थी इस लिए उनकी रोक थाम आवश्यक थी। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ाफ़ले की सूचना मिलते ही ज़ैद बिन हारसा को उसकी ओर भेजा और वे सावधानी से घात लगाते हुए आगे बढ़े कि किसी को पता न चले तथा ईस नामक स्थान पर यात्री दल को जा पकड़ा। ईस एक स्थान का नाम है जो मदीने से चार दिन की यात्रा की दूरी पर सागर के ओर स्थित ह। चूँकि यह अचानक हमला था, यात्री दल वाले इस हमले को सहन न कर सके तथा अपनी धन सम्पत्ति छोड़ कर भाग गए। ज़ैद ने कुछ क़ैदी पकड़ कर तथा क़ाफ़ले का सामान अपने अधिकार में लेकर मदीने की ओर वापसी की और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हो गए।

इसी प्रकार जमादिउल आख़िर 6 हिजरी में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारसा के नेतृत्व में 15 सहाबियों का एक दल एक स्थान की ओर भेजा जो मदीने से छत्तीस मील की दूरी पर स्थित था तथा उस स्थान पर उन दिनों में बनू सअलबा के लोग आबाद थे किन्तु इससे पहले कि ज़ैद बिन हारसा वहाँ पहुंचते उस क़बीले के लोग तुरन्त सूचना पारक इधर उधर बिखर गए।

फिर ज़ैद बिन हारसा का एक अन्य युद्ध अभियान है जो जमादिलउल आख़िर सन 6 हिजरी में हसमी की ओर भेजा गया था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारसा को पाँच सौ मुसलमानों के साथ हिसमी की ओर भेजा जो मदीने के उत्तर की दिशा में बनू जज़ाम का निवास स्थान था। इस अभियान का उद्देश्य यह था कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सहाबी जिनका नाम वहिया कलबी था शाम देश की ओर से रोम के क़ैसर को मिलकर वापस आ रहे थे। जब वहिया बनू जज़ाम के इलाक़े के पास से गुज़रे तो उस क़बीले के सरदार हनीद बिन आरिज़ ने अपने क़बीले में से एक पार्टी को अपने साथ लेकर वहिया पर हमला कर दिया तथा सारा सामान छीन लिया। व्यवसायिक सामान भी तथा जो कुछ क़ैसर ने दिया

था वह भी। वहिया ने मदीना पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरी स्थिति की सूचना दी जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ैद बिन हारसा को रवाना फ़रमाया तथा वहिया को भी ज़ैद के साथ भिजवा दिया। ज़ैद का दल बड़ी सावधानी एवं चालाकी के साथ दिन को छिपता था और रात को यात्रा करता था और यह यात्रा करते हुए हिसमी की दिशा में बढ़ते गए और ठीक सुबह के समय बनू जज़ाम के लोगों को जा पकड़ा। बनू जज़ाम ने मुक़ाबला किया तथा युद्ध हुआ किन्तु मुसलमानों के अचानक हमले के सामने उनके पाँव जम न सके तथा थोड़े से मुक़ाबले के बाद वे लोग भाग गए तथा मैदान मुसलमानों के हाथ रहा और ज़ैद बिन हारसा बहुत सा सामाना और पशु तथा लगभग एक सौ बन्दी पकड़ कर वापस आ गए। हिसमी अभियान के एक महीने बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर ज़ैद बिन हारसा को वादिउल क़ुरा नामक स्थान की ओर भेजा। इस अभियान में अनेक मुसलमान शहीद हुए, स्वयं ज़ैद को भी कई घाव लगे किन्तु ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल ने बचा लिया।

सिरया ए मौता जमादिउल अव्वल सन आठ हिजरी में हुआ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौता के सिरये के लिए हज़रत ज़ैद बिन हारसा को अमीर नियुक्त फ़रमाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि ज़ैद शहीद हो जाएँ तो जाफ़र अमीर होंगे और यदि जाफ़र भी शहीद हो जाएँ तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा तुम्हारे अमीर होंगे। एक यहूदी जिसने ये बातें सुनी थीं हज़रत ज़ैद के पास गया और उन्हें बताया कि यदि तुम्हारा रसूल सच्चा है तो तुम जीवित नहीं लौटोगे। हज़रत ज़ैद ने फ़रमाया कि मैं जीवित वापस आउँगा अथवा नहीं आउँगा किन्तु हमारा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवश्य सच्चा है। अल्लाह तआला की हिकमत है कि यह घटना पूर्णतः उसी प्रकार पूरी हुई। हज़रत ज़ैद शहीद हुए उनके बाद हज़रत जाफ़र ने सेना की कमान संभाली, वे भी शहीद हो गए। उसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने सेना की कमान संभाली, वे भी शहीद हो गए और ऐसा लगा कि सेना में बिखराव होने वाला है तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने मुसलमानों के कहने से झंडे को अपने हाथ में पकड़ा और अल्लाह तआला ने उनके द्वारा मुसलमानों को विजय प्रदान की तथा वे कुशलता पूर्वक सेना को वापस ले आए।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक हज़रत ज़ैद बिन हारसा, हज़रत जाफ़र तथा हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत की सूचना पहुंची तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनका हाल बयान करने के लिए खड़े हुए और हज़रत ज़ैद बिन हारसा के वर्णन से शुभारम्भ फ़रमाया, आपने फ़रमाया- ऐ अल्लाह ज़ैद की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह ज़ैद की मग़फ़िरत फ़रमा, ऐ अल्लाह ज़ैद की मग़फ़िरत फ़रमा, फिर आपने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जाफ़र बिन रवाहा की मग़फ़िरत फ़रमा। तबक़ातुल कुबरा में लिखा है कि जब हज़रत ज़ैद शहीद हो गए तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके परिवार वालों के पास पुर्से के लिए गए तो उनकी बेटी इस हाल में थी कि उसके चेहरे से रोने के भाव टपक रहे थे इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आँखों से भी आँसू जारी हो गए। शहादत के समय आपकी आयु 55 वर्ष थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैद का जनाज़ा पढ़ाया कि हज़रत ज़ैद की मग़फ़िरत मांगें, वे जन्नत में दौड़ते हुए दाख़िल हो गए हैं।

हज़रत जबला बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब किसी युद्ध अभियान के लिए तशरीफ़ न ले जाते तो आप हथियार किसी को न देते सिवाए हज़रत अली अथवा हज़रत ज़ैद के। हज़रत जबला फिर एक रिवायत बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दो कजावे भेंट के रूप में दिए गए तो एक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं रख लिया तथा दूसरा हज़रत ज़ैद को दे दिया। फिर हज़रत जबला ही की रिवायत है, बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में दो जुब्बे भेंट किए गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक स्वयं रख लिया और दूसरा हज़रत ज़ैद को अता फ़रमाया। एक अन्य स्थान पर बयान हुआ है कि हज़रत ज़ैद को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रमी कहा जाता था। हज़रत ज़ैद के विषय में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि लोगों में से सर्वाधिक मेरा महबूब वह है जिस पर अल्लाह ने इनाम किया अर्थात ज़ैद।

मौता के युद्ध का बदला लेने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बड़ी सेना सिफ़र गयारह हिजरी में तय्यार फ़रमाई। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को आदेश दिया कि रोम के विरुद्ध युद्ध के लिए तय्यार हो जाओ। जब यह सेना तय्यार हुई तो अगले दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद को बुलाया तथा इस अभियान का नेतृत्व आपके हवाले करते हुए फ़रमाया- अपने बाप की शहादत वाले स्थान की ओर जाओ तथा तेज़ी के साथ यात्रा करो और उन तक सूचना पहुंचने से पहले वहाँ पहुंच जाओ, फिर सवेरा होते ही वहाँ हमला करो। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ज़ैद का बदला लेने के लिए उन स्थानों को अपने घोड़ों से रौंद डालो। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसामा से आगे फ़रमाया- अपने साथ रास्ता बतान वाले को भी लेकर जाओ तथा वहाँ की सूचना पाने के लिए भी आदमी नियुक्त करो जो तुम्हें सही स्थिति से अवगत करें। अल्लाह तआला तुम्हें सफलता प्रदान करे तथा जल्द ही वापस लौट आना। इस अभियान के समय उसामा की आयु सतरह से बीस वर्ष के बीच थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा के लिए अपने हाथ से एक झंडा बाँधा और हज़रत उसामा से कहा कि अल्लाह के नाम के साथ उसके मार्ग में जिहाद करो जो अल्लाह का इंकार करे उससे युद्ध करो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीमारी बढ़ गई किन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनुरोध करते थ कि उसामा की सेना को भिजवाओ। सोमवार को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वास्थय कुछ ठीक हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसामा से फ़रमाया कि अल्लाह तआला की बरकत से रवाना हो जाओ। हज़रत उसामा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विदा होकर चले तो इसी बीच उनकी वालिदा हज़रत उम्मे ऐमन की ओर से एक व्यक्ति सन्देश लेकर आया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अन्तिम समय लग रहा है, तबीयत अत्यधिक ख़राब हो चुकी है। यह दुखद समाचार सुनते ही हज़रत उसामा हज़रत उमर और हज़रत अबू उबैदा के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, वापस आए तो देखा कि आप की अन्तिम समय की स्थिति थी। 12 रबीउल अव्वल को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निधन हुआ जिसके कारण मुसलमानों की सेना जर्फ़ नामक स्थान से वापस आ गया तथा हज़रत बरीदा ने हज़रत उसामा का झंडा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वार पर गाड़ दिया। जब हज़रत अबू बकर की बैअत कर ली गई तो हज़रत अबू बकर ने हज़रत बरीदा को आदेश दिया कि झंडा लेकर उसामा के घर जाओ ताकि वे अपने लक्ष्य के लिए रवाना हों। हज़रत बरीदा झंडा लेकर सेना की पहली जगह पर ले गए। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद पूरे अरब में विमुख होने का उपद्रव फैल चुका था। सहाबियों ने हज़रत अबू बकरे से निवेदन किया कि ऐसी स्थिति को देखते हुए उसामा की सेना को अभी रोक दें। हज़रत अबू बकर न माने और फ़रमाया कि यदि दरिन्दे मुझे घसोटते फिरें तो भी मैं इस सेना को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार भिजवाकर रहूँगा। इस प्रकार सेना एक बार फिर तय्यार हो गई। कुछ सहाबियों ने स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए फिर सुझाव दिया कि अभी इस सेना को रोक लिया जाए। एक कथन के अनुसार कुछ अन्सार सहाबियों ने हज़रत उमर से कहा कि ख़लीफ़ ए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर यदि सेना को भिजवाने पर ही अड़े हैं तो उनसे यह निवेदन करें कि वे किसी ऐसे व्यक्ति को सेना सेनापति नियुक्त कर दें जो आयु में उसामा से बड़ा हो। लोगों का यह सुझाव लेकर हज़रत उमर हज़रत अबू बकर के पास गए तो हज़रत अबू बकर ने फिर उसी दृढ़ संकल्प के साथ इरशाद फ़रमाया कि यदि जंगल के दरिन्दे मदीने में दाख़िल हाकर मुझे उठा ले जाएँ तो भी वह काम करने से नहीं रुकूँगा जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने करने का आदेश दिया है। हज़रत अबू बकर का अन्तिम निर्णय सुनने के बाद हज़रत उमर सेना के पास पहुंचे। जब लोगों ने पूछा कि क्या हुआ तो हज़रत उमर ने बड़े क्रोध से कहा कि मेरे पास से तुरन्त चले जाओ, केवल तुम लोगों के कारण मुझे आज ख़लीफ़ ए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की डांट खानी पड़ी। जब हज़रत अबू बकर के आदेशानुसार उसामा की सेना जर्फ़ के स्थान पर एकत्र हो गई तो हज़रत अबू बकर स्वयं वहाँ तशरीफ़ ले गए तथा सेना निरीक्षण किया तथा उसको सुव्यस्थित किया। उस समय हज़रत उसामा सवार थे जबकि हज़रत अबू बकर ख़लीफ़तुर्रसूल पैदल चल रहे थे। हज़रत उसामा ने निवेदन पूर्वक कहा कि ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ः, या तो आप सवार हो जाएँ या फिर मैं भी नीचे उतरता हूँ।

हज़रत अबू बकर ने फ़रमाया- बख़ुदा, न ही तुम नीचे उतरोगे और न ही मैं सवार होऊँगा और मुझे क्या है कि मैं अपने दोनों पाँव अल्लाह की राह में न लगाऊँ क्यूँकि ग़ाज़ी जब क़दम उठाता है तो उसके लिए उसके बदले में सात सौ नकियाँ लिखी जाती हैं तथा उसको सात सौ दर्जे बुलन्दी दी जाती है तथा उसकी सात सौ बुराईयाँ नष्ट की जाती हैं।

इस घटना के बाद हज़रत उमर जब भी उसामा से मिलते तो आपको सम्बोधित होकर कहा करते थे- السلام علیك ایها الامیر। कि ऐ अमीर तुम पर सलामती हो। हज़रत उसामा इसके जवाब म غفر الله لك امیر المومنین कहते थे अर्थात- ऐ अमीरुल मोमिनीन अल्लाह तआला आपसे मग़फ़िरत का सलूक फ़रमाए।

हज़रत अबू बकर ने हज़रत उसामा की सेना को इन शब्दों में उपदेश दिया था कि तुम विश्वासघात न करना, तुम संकल्प को न तोड़ना, चोरी न करना तथा शवों को मत रौंदना करना। छोटी आयु के बच्चे और बूढ़े तथा महिला का वध न करना, खजूर के वृक्ष न काटना और न ही जलाना, किसी भेड़ गाय तथा ऊँट को खान के अतिरिक्त न काटना। फिर आपने फ़रमाया कि तुम अवश्य ऐसी क़ौम के पास से गुज़रोगे जिन्होंने अपने आपको गिरजाओं में उपासना के लिए आरक्षित कर रखा होगा तो उन्हें छोड़ देना, तुम्हें ऐसे लोग भी मिलेंगे जो अपने बर्तनों में भांत भांत के खाने लाएँगे, तुम यदि उनमें से खाओ तो बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाओ तथा तुम अवश्य लोगों को तलवार का हल्का घाव लगाना और अल्लाह के नाम के साथ अपना बचाव करना, अल्लाह तआला तुम्हें प्रहार और ताऊन की आपदा से सुरिक्षत रखे। अतः पहली रबीउल आख़िर गयारह हिजरी को हज़रत उसामा अपनी सेना के साथ मदीने से चलकर मंज़िलों पर मंज़िलें तय करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत के अनुसार शाम के इलाक़े अबना पहुंचे और सुबह होते ही आपने बस्ती के चारों ओर उन पर हमला किया।

इस लड़ाई में जिसने भी मुसलमानों से मुक़ाबला किया उसको मारा गया तथा अनेक बन्दी भी बनाए गए इसी प्रकार बड़ी मात्रा में युद्ध सम्पत्ति भी प्राप्त हुई जिसमें से उन्होंने पाँचवाँ भाग रख कर शेष सेना में विभाजित कर दिया। इस अभियान को पूरा करके सेना ने एक दिन उसी स्थान पर विश्राम किया तथा अगले मदीना के लिए वापसी की यात्रा आरम्भ की।

जब यह सफल एवं विजयी सेना मदीना पहुंची तो हज़रत अबू बकर ने अन्सार तथा मुहाजिरों के साथ मदीना से बाहर निकल कर उनका भर पूर अभिनन्दन किया। सेना मदीने में दाख़िल होकर मस्जिद ए नबवी तक गई, हज़रत उसामा ने मस्जिद में दो नफ़ल अदा किए और अपने घर चले गए। जैश ए उसामा का भिजवाया जाना मुसलमानों के लिए बड़े लाभ का कारण बना क्यूँकि अरब के लोग यह कहने लगे कि यदि मुसलमानों में शक्ति एवं शौर्य न होता तो वे कदाचित यह सेना न भिजवाते। इस प्रकार काफ़िर बहुत सी ऐसी बातों से रुक गए जो वे मुसलमानों के विरुद्ध करना चाहते थे। अल्लाह तआला हज़रत ज़ैद बिन हारसा और उनके बेटे हज़रत उसामा बिन ज़ैद पर जो हमारे आक़ा व मुताअ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे महबूब थे, हज़ारों हज़ारों रहमतें और बरकतें नाज़िल फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने मुकर्रम सिद्दीक़ आदम साहब ऑफ़ आयवरी कोस्ट और मुकर्रम ग़ुलाम मुस्तुफ़ा साहब ओकाड़ा पाकिस्तान का शुभ वर्णन फ़रमाया तथा नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाया।

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131